بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 23.10.2026 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(اخاء महीने की तिथि 23,1405 हश)

क़नाअत, (संतोष, सब्र) व सादगी के हवाले से सीरतुन्नबी ﷺ का ईमान बढ़ाने वाला तज़कर:I

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 23.10.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: आँहज़रतﷺ की सादा ज़िंदगी का ज़िक्र मैं ने शुरू किया था। आप स0 की सादगी का एक अंदाज़ यह भी था कि कभी कभी अपनी ज़रूरत की चीज़े ख़ुद बाज़ार से ख़रीद फ़रमाते थे।

चुनांचे हज़रत अबूहरैरा रज़ि. बयान करते हैं कि मैं एक दिन रसूलुल्लाहﷺ के साथ बाज़ार में दाख़िल हुआ। आप स0 कपड़े के ताजिर के पास बैठ गए। फिर आप स0 ने चार दिरहम में खुला पाजामा ख़रीदा।

हज़रत आयशा रज़ि. से रिवायत है। वे कहती थीं कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. मेरे पास आए। उस वक़्त मेरे पास अंसार की दो लड़कियां कुछ गीत गा रही थीं। वे पेशावर गाने वालियां न थीं बल्कि हज़रत आयशा रज़ि. फ़रमाती हैं कि वे मेरी सहेलियां थीं। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने गाने की आवाज़ सुनी तो फ़रमाया: यह क्या कि रसूलुल्लाहﷺ के घर में तुम लोग शैतान की बांसरियां (गाना बजाना) लेकर बैठी हो। यह ईद का दिन था। हुज़ूरﷺ ने यह सुना तो फ़रमाया: ऐ अबू बक्र! हर क़ौम की ईद हुआ करती है और यह हमारी ईद है। पस इनको गीत गाने दो और मत रोको।

हुज़ूरे-अनवर ने फ़रमाया कि सादा बेतकल्लुफ़ माहौल है, कोई शिर्क की बात नहीं हो रही तो इन्हें गीत गाने दो। आँहज़रतﷺ बच्चों के पास से गुज़रते तो आप स0 उन्हें सलाम करते। उनके सर पर हाथ फेरते। उनके लिए दुआ किया करते। कोई आदमी आप स0 के साथ बैठता, या किसी ज़रूरत के लिए आप स0 से गुफ़्तगू करता तो आप स0 उसके साथ शान्त बैठे रहते यहां तक कि वह आदमी खुद उठ कर चला जाता। यह सादगी और शान्ति आने वाले को

तसल्ली और हौसला देती कि वह अपनी बात आराम से बयान करे। पस यह वह तरीक़ा है जो हमारे ओहदेदारों को भी इख़्तियार करना चाहिए।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि. बयान करते हैं कि मैं ने अपने वालिद से आँहज़रतﷺ की मजलिस के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया कि आप स0 उठते-बैठते ज़िक्र-ए-इलाही करते, किसी क़ौम के पास जाते तो जब मजलिस ख़त्म होती तो वहीं तशरीफ़ रखते। आप स0 हर साथी को उसका हक़ देते, कोई यह गुमान न करता कि कोई दूसरा उससे ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ (विशेष) है। आप स0 की सख़ावत (उदारता) और हुस्न-ए-ख़ुल्क (नैतिक सुन्दर आचरण) सबके लिए बराबर थे, आप स0 उनके लिए बाप समान हो गए थे।

हिजरत-ए-मदीना के वक़्त जब क़ुबा नामक स्थान से बाहर आप स0 एक दरख़्त के नीचे बैठे थे तो उस वक़्त अभी अह्ल-ए-मदीना की अक्सरीयत आप स0 के चेहरे से वाक़िफ़ न थी। लोग हज़रत अबू बक्र रज़ि. को आप स0 की जगह रसूलुल्लाहﷺ समझ रहे थे और बड़ी अक़ीदत से हज़रत अबू बक्र रज़ि. की तरफ मुंह करके बैठ जाते। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने यह सब देख कर झट अपनी चादर उठाई और सूरज की तरफ खड़े हो गए और कहा कि या रसूलुल्लाहﷺ! आप पर धूप पड़ रही है। मैं आप पर साया करता हूं।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. कहते हैं कि मैं एक बार बीमार हुआ तो नबीﷺ और हज़रत अबू बक्र रज़ि. मेरे घर तशरीफ़ लाए और उन्होंने मुझे बेहोश पाया। नबीﷺ ने वुज़ू किया और वुज़ू का पानी मुझ पर डाला तो मुझे होश आया।

हुज़ूरﷺ की ज़िंदगी में कोई बनावट नहीं थी, सादगी थी। आप स0 अपने सहाबा रज़ि.को भी यही समझाया करते थे कि सादगी इख़्तियार करो ताकि उनकी भी इस्लाह होती रहे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि. बयान करते हैं कि ग़ज़वा-ए-बदर के दिन तीन-तीन आदमी एक ऊंट पर बारी-बारी सवार होते थे। आप स0 के साथ सवार होने वालों ने कहा कि या रसूलुल्लाहﷺ! आप सवार हों और हम पैदल चल लेते हैं। इस पर आप स0 ने फ़रमाया कि तुम दोनों मुझसे ज़्यादा ताक़तवर नहीं हो और न मैं तुम दोनों से सवाब के मामले में बेनियाज़ हूं। इसलिए जो उसूल मुक़र्रर हो गया है उसी के मुताबिक़ अमल होगा।

हज़रत अम्र बिन हारिस रज़ि. कहते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने न कोई दीनार छोड़ा, न दिरहम, न गुलाम, न कोई लौंडी। सिवाय अपने सफेद खच्चर के, जिस पर आप स0 सवार हुआ करते थे और अपने हथियारों के और एक ज़मीन के, जो आप स0 ने मुसाफिरों के लिए वक़्फ़ कर दी थी।

हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबी करीमﷺ से यह भी साबित है कि आप स0 अच्छी से अच्छी चीज़ें भी खा लिया करते थे और यह भी साबित है कि आप स0 ने फ़ाके भी किए। कभी कभी इतने लंबे फ़ाके किए कि आप स0 को अपना पेट बांधना पड़ा। मगर हर हालत में आप स0 की ज़िंदगी शुक्र और सादगी में बसर हुई।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि. बयान करते हैं कि आँहज़रतﷺ की ज़िंदगी बड़ी सादा थी। आप स0 किसी काम में शर्म नहीं समझते थे। आप स0 अपने ऊंट को खुद चारा डालते, घर के काम-काज करते, अपनी जूतियों की मरम्मत कर लेते, कपड़े के पैवंद लगा लेते, खादिम को अपने साथ बिठा कर खाना खाते, आटा पीसते-पीसते अगर वह थक जाता तो उसमें उसकी

मदद करते। बाज़ार से घर का सामान उठा कर लाने में शर्म महसूस न करते। अमीर-ग़रीब हर एक से मुसाफ़हा (हाथ मिलाना) करते, सलाम में पहल करते, अगर कोई खजूर की दावत भी देता तो आप स0 उसे हक़ीर (तुच्छ) न समझते और उसे कुबूल करते।आप स0 निहायत हमदर्द, नरम मिज़ाज और हलीम-उत-तबअ (विनम्र स्वभाव) थे। आप स0 का रहन-सहन निहायत सादा था, बशाशत (ख़ुशी) से पेश आते, तबस्सुम आप स0 के चेहरे पर झलकता रहता। आप स0 ज़ोर का कहकहा लगा कर नहीं हंसते थे। ख़ुदा की याद में फ़िक्रमंद रहते मगर कड़वी ज़बान और सख्ती नाम की भी न थी। मुनक्सिर-उल-मिज़ाज थे, मगर इसमें कोई कमज़ोरी और पस्त-हिम्मती का अंश तक न था। बड़े सखी, नरम दिल और रहीम व करीम थे। हर मुसलमान से मेहरबानी से पेश आते। इतना पेट भर कर न खाते थे कि डकार लेते रहें। कभी हिर्स व तमअ (लालच) के जज़्बे से हाथ न बढ़ाते बल्कि साबिर व शाकिर और कम पर संतुष्ट रहते।

हज़रत आयशा रज़ि. बयान करती हैं कि रसूलुल्लाहﷺ तोहफ़ा कुबूल फ़रमाया करते थे और खुद भी हदिया भेजा करते थे। छोटे से छोटा तोहफ़ा भी होता तो आप स0 कुबूल करते और उसके बदले में तोहफ़ा दिया भी करते थे। आप स0 ने कभी किसी खाने को बुरा नहीं कहा। अगर आप स0 उसको पसंद करते तो खा लेते वर्ना छोड़ देते।

आप स0 ने खुरदरी ऊन का कपड़ा पहना, मरम्मत किए हुए जूते पहने। आप स0 ने हमेशा सख्त खाना खाया (यानी जौ की मोटी रोटी जो बगैर पानी के हलक से नहीं उतरती) और सादा पहना।

आप स0 ने अपनी ज़िरह (युद्ध कवच) जौ के बदले गिरवी रखी थी। आप स0 ने एक मर्तबा रोटी के एक टुकड़े पर खजूर रखी और फ़रमाया कि यह इसका सालन है। यूं खजूर के साथ रोटी खाई। आप स0 की खिदमत में एक मर्तबा गर्म खाना लाया गया। आप स0 ने तनावल किया और फ़रमाया कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, इतने अर्से से गर्म खाना नहीं खाया था। हज़रत आयशा रज़ि.कहती हैं कि नबी करीमﷺ ने उस वक़्त वफ़ात पाई जब हम खजूर और पानी सीर (सैर) होकर खाते थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि तय्यबीन (पवित्र) और ताहिरीन (पाक) का सीर (भर पेट) होकर खाना उस किस्म का सीर (छक कर खाना) होना नहीं है जो उन लोगों का हुआ करता है जिनके हक़ में खुदा तआला ने फ़रमाया है कि ऐसे खाते हैं जैसे चारपाए खाते हैं और आग उनका ठिकाना है।

आँहज़रतﷺ का किसी वक़्त सैर होकर खाना और ही नूर है और अगर उस सीरी को उन लोगों की तरफ निस्बत दी जावे जिनका असल मकसद एहतिज़ाज़ (यानी लज़्ज़त हासिल करना और उससे फ़ायदा उठाना) हासिल करना और जिनकी निगाहें नफ़्सानी शहवात के इस्तफ़ा तक महदूद हों, उस सीरी को हम हरगिज़ सीरी नहीं कह सकते। सीरी की तअरीफ़ में पाकों और मुक़द्दसों की इस्तलाह (उचित शब्द) और नापाकों और शिकम-परस्तों (पेट पूजकों) की इस्तलाह अलग-अलग है। पाक लोग उसी क़दर ग़िज़ा का नाम सीरी रख लेते हैं कि जब फ़िलजुमला वक़्त-ए-जूअ (भूख का आभास) दूर हो जाए और हरकत-ओ-सकनात पर कूवत हासिल हो जाए। ग़र्ज़ मोमिन की सीरी यही है कि इस कदर ग़िज़ा खाए कि जो उसकी पुश्त (शक्ति) को क़ायम रखे और हुकूक़-ए-वाजिबा अदा कर सके। पस जो सय्यद-उल-मुर्सलीन है

उसकी सीरी की तुलना आम लोगों की सीरी से अलग है। इसी तरह बहुत लोगों ने आप स0 की शान-ए-अज़ीम को नहीं समझा और अल्फाज़ के उचित उपयोग को मल्हूज़ नहीं रखा और अपने आपको ग़लती में डाल लिया। आँहज़रतﷺ का किसी वक़्त यह फ़रमाना कि मैं सैर हो गया हूं हरगिज़ उनके क़ौल की मुराद नहीं जिन्होंने असल मकसद अपनी ज़िंदगी का खाना ही समझा हुआ है। ग़र्ज़ पाकों का काम और कलाम पाकों के मरातब-ए-आलिया (उच्चतम स्तर) के मुताबिक़ समझना चाहिए और उनके उमूर का दूसरों पर क़ियास करना सही नहीं है। वे दरहक़ीक़त इस आलम से बाहर होते हैं चाहे वे इस आलम के अंदर ही हों।

हज़रत आयशा रज़ि. ने बयान किया कि जब भी मैं दिन में दो मर्तबा सैर होकर खाना खाती हूं तो मुझे रोना आता है। पूछा गया कि क्यों रोना आता है? तो आप रज़ि. ने फ़रमाया कि मुझे रसूलुल्लाहﷺ की वह हालत याद आ जाती है जिस में आप स0 ने दुनिया छोड़ी। खुदा की कसम! रसूलुल्लाहﷺ ने कभी एक दिन में दो मर्तबा रोटी और गोश्त पेट भर कर नहीं खाया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैद रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में खाना पेश किया गया। हज़रत आयशा रज़ि. ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी स0! आप टेक लगा कर खाएं यह आपके लिए ज़्यादा आरामदेह होगा। आप स0 ने अपनी पेशानी ज़मीन की तरफ झुका दी और करीब था कि वह ज़मीन को छुए। आप स0 ने फ़रमाया: मैं तो उसी तरह खाऊंगा जिस तरह आम बंदा खाता है और उसी तरह बैठूंगा जिस तरह आम बंदा बैठता है क्योंकि मैं तो महज़ एक बंदा हूं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि आँहज़रतﷺ की पाक ज़िंदगी का मुताला (अध्यन) करो ताकि तुम्हें मालूम हो कि आप स0 ऐसे ख़लीक़ (सज्जन स्वभाव) थे बावजूद इसके कि आप स0 बड़े रोबदार थे लेकिन अगर कोई ज़ईफ़ा (बूढ़ी) औरत भी आप स0 को खड़ा करती तो आप स0 उस वक़्त तक खड़े रहते जब तक वह इजाज़त न दे।

ख़ुत्बः के आख़िर में हुज़ूरे-अनवर ने फ़रमाया कि आप स0 का मक़ाम बहुत आला (उच्चतम) मक़ाम है और आप स0 के हर अमल में एक उसवा (नमूना) है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍوَّبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

1

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131